लक्ष्मी-नारायण

स्वर्ग के रचयिता और उनकी दैवी रचना

परमात्मा (परम+आत्मा) का परिचय

ज्ञान सागर, पतित पावन, सर्व के सद्गतिदाता, गीता ज्ञान दाता शिव भगवानुवाच :-

हे वत्सों ! मैं नाम और रूप से न्यारा व सर्वव्यापी नहीं हूँ। मेरा नाम 'शिव' है, रूप अव्यक्त ज्योतिर्बिन्दु है, अखंड ज्योति ब्रह्ममहातत्व मेरा और तुम आत्माओं का निवास स्थान है। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर देवताओं का भी रचयिता होने के कारण मैं 'त्रिमूर्ति शिव' भी कहलाता हूँ।

अब मैं प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण वृद्ध तन में दिव्य प्रवेश करके मनुष्य सृष्टि के आदि, मध्य और अंत का सहज ज्ञान तथा राजयोग सिखाकर तुम भारत-वासियों को पुन: पतित से पावन बना रहा हूँ। इस अहिंसक ज्ञान और योग बल से स्वर्ग या वैकुण्ठ का सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी दैवी रामराज्य, जो भारत के काँग्रेस पति बापू गांधी जी चाहते थे, सो मैं पांडवपति, सृष्टि का बापूजी, ब्रह्मा मुखवंशावली शिवशक्ति-पांडव सेना द्वारा स्थापन कर रहा हूँ।

साथ ही साथ महादेव शंकर द्वारा प्रेरित होवनहार कल्याणकारी, महाभारी महाभारत लड़ाई और प्राकृतिक आपदाओं द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का महाविनाश कराकर सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति या शांतिधाम जाने का द्वार खोल रहा हूँ।

एकज भूल

प्रिय वत्सों ! 5000 वर्ष पूर्व महाभारत के समय मैंने ही अविनाशी ज्ञान सुनाया था जिसका यादगार शास्त्र श्रीमद्भगवद्गीता गाया जाता है; परंतु भारतवासियों की सबसे बड़ी भूल यही है कि सर्वशास्त्रमयी शिरोमणि श्रीमद् भगवद्गीता पर मुझ ज्ञान-सागर, गीता-ज्ञान दाता, दिव्य चक्षु विधाता, पतित-पावन, जन्म-मरण रहित, सदा मुक्त, सभी धर्म वालों के गति-सद्गति दाता परमपिता परमात्मा शिव का नाम बदल 84 जन्म लेने वाले, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सतोप्रधान सतयुग के प्रथम राजकुमार श्री कृष्ण (जिसने स्वयं इस गीता द्वारा यह पद पाया है) का नाम लिख कर भगवद्गीता को ही खंडन कर दिया है। इस कारण ही भारतवासी मेरे से योग भ्रष्ट हो, धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट, पतित, कंगाल, दु:खी बन गए हैं।

यदि भारत के विद्वान, आचार्य, पंडित यह भूल न करते तो सृष्टि के सभी धर्म वाले श्रीमद्भगवद्गीता को मुझ, निर्वाण धाम ले जाने वाले पंडे (Liberator & Guide) परमप्रिय परमपिता शिव के महावाक्य समझ कितने प्रेम और श्रद्धा से अपना धर्म शास्त्र समझ पढ़ते और भारत को मुझ परमपिता की जन्मभूमि (God's Birth Place) समझ इसको अपना सर्वोत्तम तीर्थ स्थान मानते।

ईश्वरीय संदेश

आने वाले 10 वर्षों में भारत से भ्रष्टाचार और विकारों का अन्त होने वाला है तथा होवनहार विश्वयुद्ध के पश्चात् सतयुगी सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी-श्री नारायण का राज्य शीघ्र ही आने वाला है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारियाँ और ब्रह्माकुमार

श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के 84 जन्मों की सत्य कहानी

शिव भगवानुवाच:-

प्रिय वत्सों ! आज से 5000 वर्ष पहले सतयुग की आदि में इस ही भारत पर पूज्य राजराजेश्वरी श्री लक्ष्मी और राजराजेश्वर श्री नारायण अटल, अखंड, निर्विघ्न, सम्पूर्ण, सुख-शांति सम्पन्न राज्य करते थे। स्वयंवर के पूर्व इन्हों का नाम श्री राधे और श्रीकृष्ण था। वे सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम और सम्पूर्ण अहिंसक थे। इन्होंने सतयुग के 1250 वर्षों में सूर्यवंशी देवता कुल में 8 जन्म लिए और त्रेतायुग के 1250 वर्षों में चंद्रवंशी कुल में राज्य-भाग्य सहित 12 जन्म लिए। द्वापर और कलियुग के 2500 वर्षों में वैश्य और शूद्र कुल में शिरोमणि भक्त राजा-रानी अथवा प्रजा कुल में 63 जन्म लिए।

अब कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग में श्री नारायण के अंतिम 84 वें जन्म के साधारण तन की वानप्रस्थ अवस्था में मैं (निराकार शिव परमात्मा) ने दिव्य प्रवेश कर इनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखा है और श्री लक्ष्मी का वर्तमान 84 वाँ जन्म ब्रह्मा मुखवंशावली ब्रह्माकुमारी का है जिसका नाम मैंने जगदम्बा सरस्वती रखा है और कल्प पहले की तरह ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा सहज राजयोग और ईश्वरीय ज्ञान सिखलाकर, फिर से नई सतयुगी दैवी दुनियाँ, स्वर्ग अथवा वैकुण्ठ की पुन: स्थापना कर रहा हूँ। यही प्रजापिता ब्रह्मा और उनकी मुख सन्तान ब्रह्माकुमारी सरस्वती अपने तीव्र पुरुषार्थ से भविष्य जन्म में फिर से वही सतयुग के पूज्य विश्व महाराजन राजराजेश्वर श्री नारायण और विश्व महारानी राजराजेश्वरी श्री लक्ष्मी का पद प्राप्त करेंगे।

प्रिय वत्सों ! अब मुझ विश्व के बापूजी को सम्पूर्ण पवित्रता, सुख-शांति सम्पन्न सत्य दैवी स्वराज्य स्थापन करने में जो कमल पुष्प समान गृहस्थ-व्यवहार में रहते हुए देह सहित देह के सभी संबंधियों से बुद्धि योग तोड़ मेरे साथ योगयुक्त होंगे अर्थात् राजयोगी बनेंगे और पवित्र रहेंगे वही भविष्य आधा कल्प (2500 वर्ष) में 21 जन्मों तक सतयुगी सूर्यवंशी और त्रेतायुगी चन्द्रवंशी कुल में ऐसा नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी अर्थात् मनुष्य से देवता पद प्राप्त करेंगे।

(तत्कालीन) मुख्य केन्द्र
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
पाण्डव भवन, माउण्ट आबू (राजस्थान)

(वर्तमान कालीन) अन्य आध्यात्मिक परिवार
आध्यात्मिक विश्व विद्यालय

- दिल्ली : ए-1, 351-352, विजय विहार, पो. रिठाला, रोहिणी से.5 के पास, दिल्ली-110 085
- फर्रुखाबाद : 5/26ए, सिकत्तरबाग, जि. फर्रुखाबाद (उ.प्र.)209625 (0)9335683627
- कम्पिला : नेहरु नगर, गंगा रोड, ग्रा.पो. कम्पिला, जि. फर्रुखाबाद (यू.पी.) 207505 (0)9389079293
- लखनऊ : एस./99 चंद्रमा मार्केट, भूतनाथ मेन मार्केट, पो.इंदिरानगर, लखनऊ- 226016 (यू.पी.)
- कोलकाता : सी.एल.-249, सैक्टर-2, सॉल्ट लेक सिटी, कोलकाता-700091(पश्चिम बंगाल) (0) 9330417213
- मुंबई : प्लॉट नं.96 बी, 'सरोवर', डिसिल्वा नगर, नालासोपारा (वेस्ट),तहसील- वसई, जिला-थाना-401203
- हैदराबाद : 29/3 आर.टी. प्रकाशनगर, पो. बेगमपेट, हैदराबाद- 500016 (आन्ध्रा) (0)9394693379
- बैंगलूर : शिवज्योति निलयम, 138, फर्स्ट मेन, टिन फैक्टरी के पीछे, उदयनगर, पो. दूरवाणीनगर,पिन-560016 (कर्ना)
- चण्डीगढ़ : हाऊस नं.634, केशोराम कॉम्पलेक्स, सैक्टर नं. 45 सी, पो.-चुईल, जिला-चण्डीगढ़ - 160047 (पंजाब)